International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कला परिदृश्य में लघुचित्र शैलियों का योगदान – राजस्थान के संदर्भ में

डॉ० रमेश चन्द्र वर्मा
सह आचार्य, (ड्राईग एण्ड पेन्टिंग)
(आर. डी. गर्ल्स कॉलेज, भरतपुर)

भारतीय चित्रकला के इतिहास में गुप्तकाल (अजन्ता की कला) के पश्चात् राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के मध्य पनपी कला जो शैलिगत रूप से उत्कृष्ट नहीं मानी गई, जिसे रायकृष्ण दास ने अपभ्रंश शैली नाम दिया। (1) जिसका प्रमुख कारण भित्ति जैसे विशाल अन्तराल से सिमटकर ताड़पत्र जैसे संकरे अन्तराल में चित्र बनाने की दिशा में नये मार्गों की खोज था । इस परिवर्तन का प्रभाव शैली तथा तकनीक दोनों पर पड़ा और एक प्रकार से चित्रकला के नये इतिहास का अंकुर फुटा जिसमें ताड़पत्र कपड़े, अगरु, वक्कल, कागज तथा लकड़ी के पट्ट पर बने धार्मिक ग्रन्थों में चित्रकारी की गई थी। आरम्भ में बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों तथा बाद में हिन्दू धर्म ग्रन्थों का निर्माण एवं उनमें चित्रण किया गया। (2)

अपभ्रंश शैली, मध्यकाल तक आते–आते स्थानीय लोककला एवं ईरानी मुगल शैली के सम्पर्क में आने से उन्नत होती गई और पहाड़ी, मुगल तथा राजस्थानी (राजपूत शैली) के नाम से आज हमारे सामने है। (3) इन शैलियों की अनेक उप शैलियाँ विकसित हुई जो अपनी निजी विशेषता के कारण अपनी अलग पहचान रखती हैं।

राजस्थान के संदर्भ में इनकी प्रमुख शैलियाँ एवं उपशैलियाँ निम्न प्रकार से हैं (4):–

1– मेवाड़ शैली – उदयपुर, नाथद्वारा, प्रतापगढ़ ।

2– मारवाड़ शैली – जौधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर, सिरोही।

3– हाड़ौती शैली – कोटा, बूँदी, झालावाड़ ।

4–ढूँढाड शैली – जयपुर, उणियारा, अलवर।

इन लघुचित्र शैलियों के विषयों में 'धार्मिक' एवं 'पौराणिक कथा चित्रण' (रामायण, महाभारत एवं कृष्ण–चरित्र) के, रागमाला, नायक–नायिका, ऋतु चित्रण, लोक–जीवन (पनघट, विश्राम स्थल, तीज–त्यौहार) ऐतिहासिक घटनाओं, दरबारी जीवन तथा राजा–रानियों व सामन्तों आदि के व्यक्ति चित्रों का चित्रण रहा है। (5)

राजस्थानी लघुचित्रों को बनाने की तकनीक उस समय के उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप रही है। इसमें चित्रण हेतु कागज तैयार करना, इसमें एक पर एक जमाये गये कागजों को चिपकाकर मोटा कागज तैयार करना है। रंग भरने हेतु गिलहरी के पूँछ के बाल, बछड़े के कान के बाल तथा बकरी के पेट के बाल का प्रयोग कर ब्रश बनाना तथा रंग बनाने हेतु खनिजों, यौगिकों एवं प्राकृतिक लवणों के अतिरिक्त वनस्पतियों तथा जैविक तत्वों जैसे नील तथा कृ मिदाना आदि का प्रयोग कर तैयार करना अतिविशिष्ट एवं श्रमसाध्य रहा है। इन रंगों के साथ–साथ मुगल प्रभाव से सोने एवं चाँदी के रंगों का निर्माण एवं प्रयोग राजस्थानी लघुचित्रों की विशेषता रही है।

चित्रण तकनीक की विशिष्टता के साथ–साथ इनकी शैलीगत विशेषताएँ आकर्षित करती हैं (6) जिनमें

1. "एक चश्म चेहरों का प्रचलन प्रायः सभी चित्रों में देखने को मिलता है। राजस्थान की किशनगढ़ शैली में निर्मित बनी–ठणी का एक चश्म चेहरा सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है ।

2. इस शैली में सूर्यास्त के समान चटकीले तथा आकर्षक रंग योजना का प्रयोग मिलता है। ये रंग टेम्परा पद्धति के अनुरूप अपारदर्शक है। सोने एवं चाँदी के रंगों का प्रयोग भी किया गया है।

3. संयोजन की दृष्टि से सम्पूर्ण कथानक को एक ही फलक के कई भागों में विभक्त कर महत्वपूर्ण घटनाओं के अंश उनमें चित्रित किये जाते थे, जिसको देखने से सम्पूर्ण घटनाक्रम चलचित्र की भांति दर्शक के सामने उपस्थित हो जाता है, चित्र को विशिष्ट बनाता है। यह विशिष्टता मेवाड़ शैली में देखी जा सकती है ।

4.चित्र में वैज्ञानिक परिपेक्ष्य के स्थान पर बहु–बिन्दू परिपेक्ष्य के आधार पर चित्रण किया है। जिसके कारण चित्रकार ने महल के बाहरी दरवाजे का
दृश्य, महल का आन्तरिक कक्ष, छत का दृश्य एवं वहाँ से दिखते प्राकृतिक दृश्य को एक साथ चित्रित किया। यह कलाकार की सहज प्रवृति का परिचायक है ।

5. आलंकारिक अंकन की प्रवृत्ति लघुचित्रों की विशिष्ट पहचान है। वृक्षों, पशुओं, पक्षियों आदि की आकृतियों में किंचित आलंकारिकता का समावेश है। पेड़–पौधों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

की एक–एक पत्तियों का अंकन बड़ी बारीकी से अंकित किया गया है। मानवीय आकृतियों में भी काव्य में प्रयुक्त होने वाली उपमाओं के आधार पर अंगों–उपागों का अंकन होता है। उदाहरण स्वरूप किशनगढ़, जोधपुर एवं बीकानेर के चित्रकारों ने नारी के नेत्रों को खंजन पक्षी के रूप में देखा तो उदयपुर एवं नाथद्वारा के चित्रकारों ने मृग के रूप में, जयपुर के चित्रकारों ने नारी नेत्रों की तुलना मीन से की तो बूँदी के चित्रकारों ने आम्रपत्रों से।

भारतीय परम्परा में शरीर जड़ और आत्मा चेतन मानी जाती है। अतः राजस्थान में जितने भी चित्र बने उनकी आकृति पर शान्ति की आभा बनी है। शरीर का कोई अंग अतिरेक सा नहीं लगता। आत्मा के चित्रण की जो परम्परा बढ़ी वह केवल देवताओं की मूर्तियों तक ही सीमित नहीं रही वरन् संतों, राजाओं, यहाँ तक की नारी के चित्रों में भी मौजूद रही। राजस्थानी चित्रकारों ने प्रेम और विरह की अनन्नता तथा अदृश्य के अनुसंधान में भी अपने को पर्याप्त खपाया है। यही कारण है कि आज भी उनकी कला अमरता की और बढ़ती दिखाई दे रही है । कला का विद्यार्थी होने के नाते इतिहास के अध्ययन के रूप में या कलाकार के रूप में इन चित्रों का बार–बार आस्वादन करने की इच्छा हर कलाकार के मन में रहती है। समसामयिक परिदृश्य में आज के कलाकारों द्वारा लघु चित्र शैलियों की इन्हीं विशेषताओं को अपनी कला में स्थान दिया। इसको दो प्रकार के कला समूहों में देखा जा सकता है।

1– प्रथम प्रकार का समूह वह है जिन्होंने लघु चित्रण परम्परा के अनुसार कार्य करते हुए अपनी शैली विकसित की है इनमें डॉ० सुमहेन्द्र जिन्होंने किशनगढ़ शैली के अनुरूप आकृत्तियों को आधुनिक विषय के अनुरूप कटाक्षपूर्ण ढंग से अपने चित्रों में प्रयुक्त किया है (चित्र सं. 2)। इन चित्रों में लघुचित्रों की सी बारीकी, तकनीकी कौशल और आकृत्तियाँ दिखाई देती हैं। डॉ० नाथूलाल वर्मा ने मेवाड़, मारवाड़ तथा अजन्ता शैली का मिश्रण कर महाभारत, गीत–गोविन्द तथा राजस्थानी प्रेमाख्यान आदि विषयों पर अपने चित्रों का निर्माण कर अपनी निजि शैली विकसित की है (चित्र सं. 5)। कन्हैयालाल वर्मा जो परम्परागत चित्र शैलियों में पारंगत है ने भी कांगडा, मुगल तथा राजस्थानी शैलियों का मिश्रण कर अपनी निजी शैली विकसित कर लघु चित्रण परम्परा को समृद्ध किया है (चित्र सं. 4)। –

वीर–सतसई के दोहों पर आधारित वीरांगना श्रृंखला एवं रागिनी धनाक्षरी का चित्रांकन किया है समन्दर सिंह खंगारोत ने लघु चित्रों की बारीकी एवं तकनीकी कौशल को विशाल कैनवास पर बड़ी श्रमसाध्यता से उकेर कर इस परम्परा को आगे ले जाने का प्रयास किया। आपका बनाया समाधिस्थ महादेव चित्र इन सभी उत्कृष्टता को समेटे है (चित्र सं. 7)। शहजाद अली शिरानी, ने किशनगढ़ शेली को नवीन अर्थ प्रदान कर उस परम्परा को आगे बढ़ाया उनके बनाये चित्र होली, अखिया मापन, हिण्डोला आदि प्रमुख हैं(चित्र सं. 1)।

कैलाशचन्द शर्मा, (चित्र सं. 6)। चंदुलाल चौहान, फूलचंद वर्मा, लालचन्द मारोठिया, घनश्याम शर्मा, बी.पी. शर्मा, तेज सिंह, रमेश ग्रामीण, रमेश वर्मा आदि ऐसे कलाकार हैं जो लघुचित्रण पद्धति में पारंगत है तथा उसमें कुछ प्रयोग करते हुए उसे आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहें हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

2– दूसरी प्रकार के कलाकारों में वे हैं जिन्होंने लघुचित्र शैलियों से प्रेरणा लेकर नवीन सृजन करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इनमें डॉ० शैल चौयल का नाम सबसे प्रमुख है, आपने लघुचित्रण शैली से अन्तराल विभाजन, चटख रंगों का प्रयोग एवं संरचना सौष्ठव को लेते हुए उसमें नवीन अर्थ भरे हैं (चित्र सं. 1) आपका तेल रंग में बना चित्र रंगीलों जौवन इसका सुन्दर उदाहरण है। इसके अतिरिक्त अनेकों चित्रों का निर्माण किया है जो लघु चित्रों की याद दिलाते हैं। उदयपुर के अनेक कलाकारों ने इस परम्परा में कार्य किया है, इसमें अपने आरम्भिक चित्रों में डॉ० किरण मुडिया, ललित शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा आदि का काम भी उल्लेखनीय है ।

इन सभी कलाकारों के उल्लेख के मध्य राजस्थान के पद्म श्री से सम्मानित कलाकार स्व. रामगोपाल विजयवर्गीय एवं कृपाल सिंह शेखावत, तथा द्वारका प्रसाद शर्मा का योगदान भी रेखांकित करना आवश्यक होगा, आप लघु चित्र परम्परा के ज्ञाता रहे तथा इसको जीवन्त रखने में आपका अप्रतिम योगदान है ।

वर्तमान में भी बहुत से कलाकार इन शैलियों से प्रेरणा लेकर आधुनिक कृतियों का सृजन कर रहे हैं, उनके चित्रों में आलंकारिकता, सजावटीपन और आकृतियों के अंकन में परम्पराओं का प्रभाव दिखलाई देता है।

परम्परागत पद्धति में काम करने वाले कलाकारों के मध्य भी कार्य करने में कठिनाई हो रही हैं प्राकृतिक रंगों की अनुपलब्धता, प्राचीन पद्धति से बनाई जाने वाली ब्रु"ा पर रोक इत्यादि ने इस परम्परागत कला में कार्य करना कठिन होता जा रहा है। कुछ द"ाक पूर्व राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अपनी वार्षिक प्रद"ानी में लघुचित्रण तकनीक पर आधारित चित्र हेतु एक पुरस्कार आरक्षित रखा जाता था वह अब समाप्त हो गया। परम्परागत शैली में काम करने वाले कलाकारों को हैय

दृष्टि से देखा जाता है और उनके कार्य का आकलन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट विभाग द्वारा होने पर वह एक अलग धारा में बंध कर रह गया है। महाविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले चित्रकला विषय एवं व्यावसायिक ि"ाक्षा के पाठ्यक्रम (एम.एफ.ए. एवं बी. एफ. ए.) में भी इस विधा को प्रायोगिक विषय के रूप में रखना बंद कर दिया। जबकि सबसे ज्यादा शैधकार्य इन शैलियों पर हुआ है परन्तु प्रायोगिक तौर पर इसमें कार्य करने वाले कलाकारों की संख्या कम से कमतर होती जा रही है।

इस विषय पर हो रही अन्तर्राष्ट्रीय सैमीनार के माध्यम से शायद यह विद्या पुनर्जीवित हो सके और इसमें कार्य करने वालों की संख्या बढ़ सके तथा उन्हें उचित सम्मान भी मिलने लगे। जिससे प्रेरणा लेकर असंख्य आधुनिक चित्रकार अपनी शैली विकसित कर अपना नाम कमा रहें हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. भारतीय चित्रकला का इतिहास, अविना"ा वहादुर वर्मा 1968 पृष्ठ संख्या 111
2. वही पृष्ठ संख्या 112–113
3. वही पृष्ठ संख्या 175
4. कला और कलम डॉ॰ गिर्राज कि"ोर अग्रवाल पृष्ठ संख्या 145
5. भारतीय चित्रकला का इतिहास अविना"ा वहादुर वर्मा पृष्ठ संख्या 181–182
6. वही पृष्ठ संख्या 183–186
7. भारतीय चित्रकला, शोध संचय, 1997
8. समकालीन भारतीय कला, डॉ० ममता चतर्वेदी, 2012
9. समकालीन कला, ललित कला अकादमी पत्रिका वर्षा 1984
10. आकृति, समाचार बुलेटिन ।
11. राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ, सम्पादक, प्रेमचन्द गोस्वामी, 1972 राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा प्रका"ित।
12. आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन, 80
13. वार्षिक कला प्रदर्शनी के केटलॉग, राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन
14. सुमहेन्द्र, कलावृत प्रकाशन, 1988
15. कला किरण, त्रैमासिक कला पत्रिका मई–जुलाई 1998
16. भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रेमचन्द गौस्वामी, 1999
17. सृजन राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन 1962 से 1967
18.– कला दीर्घा, दृष्य काव्य की छमाही पत्रिका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

6

चित्र सं. 1

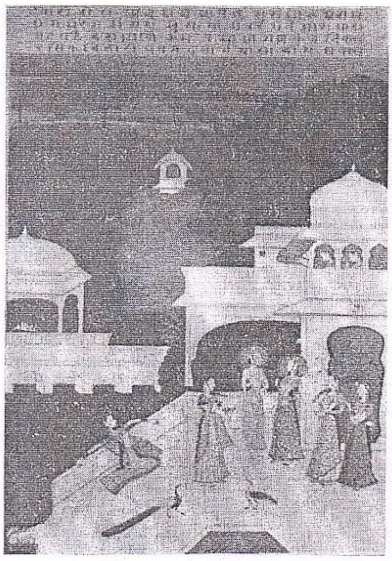

कुंज महल में राधा कृष्ण

चित्र सं. 2

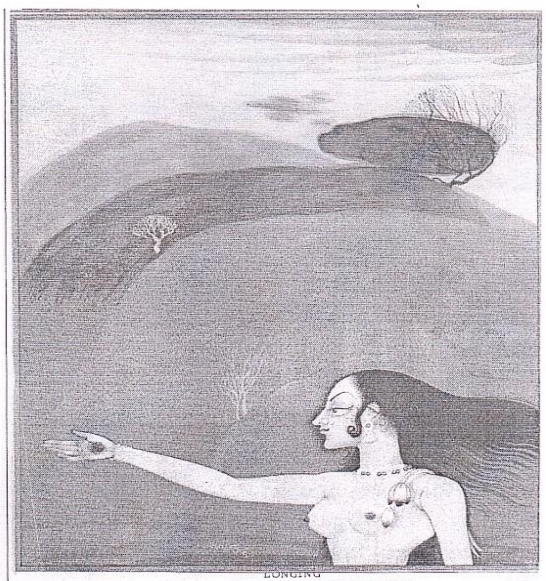

LONGING
Tempera on paper 20x17 cms. 1986
PLATE V
Collection - Pierre Jocard, Switzerland

चित्र सं. 3

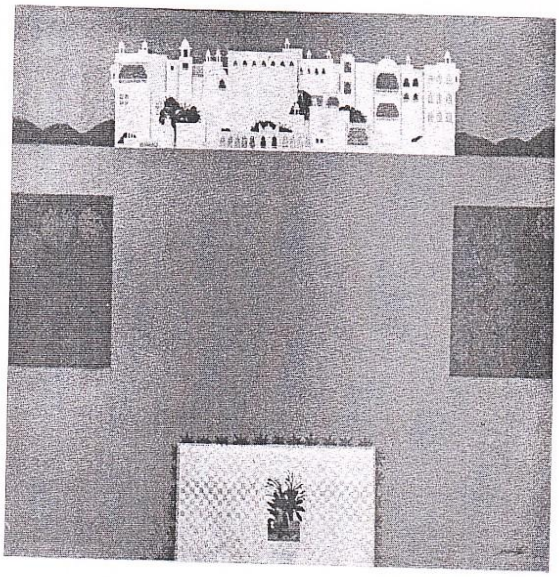

चित्र सं. 4

TANDAV NRITYA Tempera Size-31x41 CM

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 5, May- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

7

चित्र सं. 5

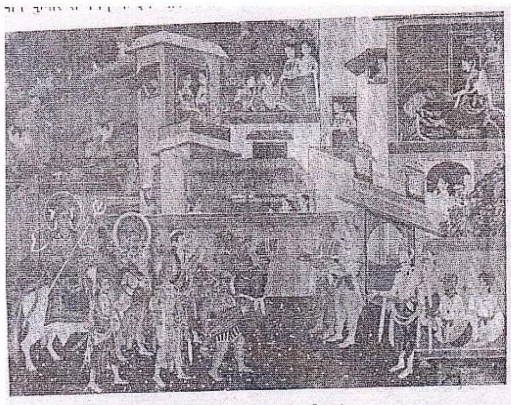

माधूलाल वर्मा की पुरस्कृत कृति 'शिव विवाह'

चित्र सं. 6

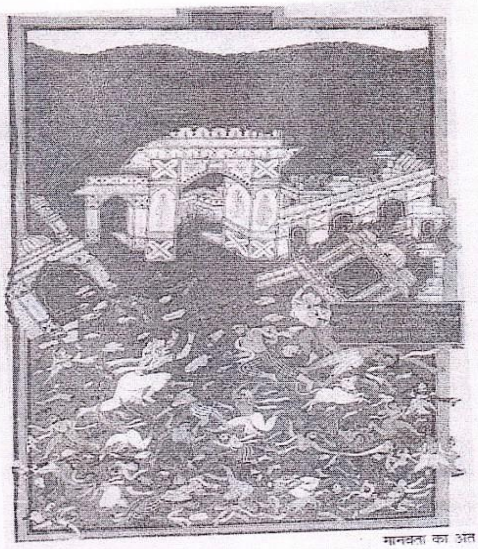

मानवता का अंत

चित्र सं. 7

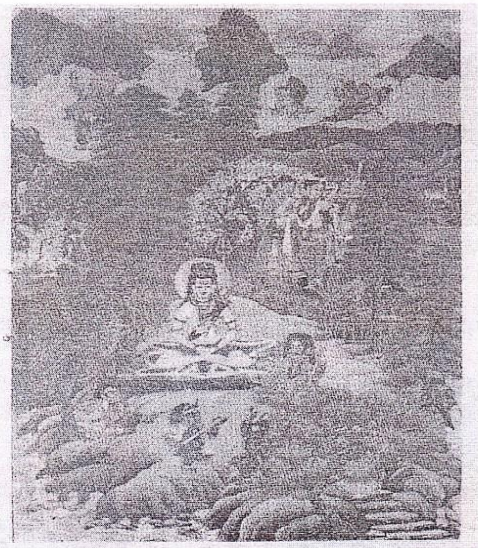

समदर सिंह खंगारोत की पुरस्कृत कृति 'समाधिस्थ महादेव'